Mehvish.qxd 25/07/13 6:06 PM Page 2

छाया: मनीषा

महविश और उसकी बेटियां, महविश का मृत पति अब्दुल हाकिम

महविश को वक्त रहते बचाएं

हाल ही में हुए हमले से सहमा हाकिम का परिवार

खाप पंचायतें दावा करती हैं कि वे कभी प्रेमी जोड़ों को मारने का आदेश नहीं देती हैं। लेकिन बुलंदशहर (उत्तर प्रदेश) के गांव भाटगढ़ी में रह रही महविश की दास्तां खाप के इन दावों झूठा साबित करती है। गांव के बाहर ही यूनुस का घर है। अजान की आवाज आ रही है और यूनुस बताते हैं, 'मेरे छोटे भाई अब्दुल हाकिम को यहीं गोलियों से भून दिया था। उसके हत्यारों को सजा दिलवाने के लिए लड़ाई लड़ रहे मेरे भाई यूसुफ ने पुलिसिया रवैये से तंग आकर पुलिस की मौजूदगी में अपने को आग लगाकर जान दे दी। अब वे लोग महविश को मारना चाहते हैं, मार डालेंगे, कल ही घर पर हमला हुआ है।' हाकिम की विधवा, 22 वर्षीय महविश कभी सात महीने की बच्ची जोया खान को संभालती है तो कभी डेढ़ साल की बड़ी बेटी मंतसा को।

भाटगढ़ी में महविश के जेठ का घर है। इससे पहले दोनों परिवार गांव अढ़ौली में रहते थे। दोनों गांवों के बीच सिर्फ ईख का एक खेत है। अढ़ौली में दोनों परिवारों के घर की दीवार एक थी। महविश बताती है, 'मैं छठी क्लास में और हाकिम आठवीं में थे ,एक साथ स्कूल जाते थे। मैं तभी से हाकिम से प्यार करती थी। मेरी अम्मी को इस बारे में अंदाजा था। हाकिम के साथ मेरी बढ़ती नजदीकियां देख मेरे परिवार ने मुझे आठवीं के बाद स्कूल से हटा लिया और हाकिम पढ़ाई के लिए शहर चला गया। तभी खाला के बेटे से मेरा निकाह तय हो गया। लेकिन निकाह से एक रात पहले 29 अक्टूबर 2010 को मैं और हाकिम गांव से भाग गए।' 31 अक्टूबर को महविश की बारात वाले दिन उसके घर पंचायत हुई। गांव में मस्जिद के लाउडस्पीकर से ऐलान हुआ कि 'हाकिम और महविश घर से भाग गए हैं,जहां भी ये दिखाई दें,इन्हें मार दिया जाए, मारने वाले को 50,000 रुपये नगद ईनाम दिया जाएगा।'

महविश मुस्लिम में झोजा (सवर्ण) और हाकीम फकीर (निम्न) जाति से था। निकाह के बाद दोनों मेरठ-दिल्ली की खाक छानते रहे। उधर हर जगह महविश की बिरादरी के लोग उन्हें ढूंढ रहे थे। हाकिम के बूढ़े पिता मोहम्मद लतीफ को पंचायत ने घर से निकाल कर पेड़ से उलटा लटकाकर मारा। उनकी मौत हो गई। हाकिम के परिजनों के घरों पर छापे मारे और उन्हें उठाया जाने लगा। यूनुस बताते हैं कि उनके बेटे शाहनवाज को बुरी तरह पीटा। हाकिम के चाचा अलीमुद्दीन कहते हैं, 'पुलिस हमें गिरफ्तार कर कोतवाली में हमसे शोले फिल्म के गीत नाच बसंती नाच पर भद्दा डांस करवाती थी।' यूनुफ के अनुसार ऐसे में सभी ने तय किया कि सारा परिवार भाटगढ़ी में एक साथ रहेगा। इससे पहले महविश ने उच्च न्यायालय से अपने और हाकिम के परिवार के लिए सुरक्षा की मांग की थी जिसे उच्च न्यायालय ने मान लिया था। लेकिन स्थानीय पुलिस ने महविश को दुतकार कर भगा दिया। इन्हें सुरक्षा नहीं दी गई। मामले में पुलिस और प्रशासन ने कोई मुस्तैदी नहीं दिखाई बल्कि अढ़ौली गांव के दबंगों (महविश की बिरादरी के चाचा-मामा) का साथ दिया। महविश बताती है 'मेरे परिवार पर मुझे और हाकिम को मारने का दबाव मेरे चाचा चौधरी जलीस, बिरादरी के चाचा आसिफ, असलम, आदिल ने बनाया। इन्होंने मेरे परिवार से कहा कि अगर तुम पंचायत का साथ नहीं दोगे तो जाति से निकाल देंगे। हम नहीं चाहते कि जब हम अपनी बेटियों की शादी करें तो कोई हमसे यह कहे कि आप तो महविश के गांव से हैं न जो भाग गई थी, इससे हमारी नाक कटेगी। मेरी अम्मी इनके दबाव में आ गई और इनका साथ देने लगी। मेरे परिवार को मुझे मारना ही होता तो पहले ही मार देते।'

वह बताती है कि जब वह दूसरी दफा गर्भवती हुई तो हाकिम और उसे लगा कि मामला ठंडा हो गया है, ये लोग भाटगढ़ी आकर रहने लगे। दुश्मनों को खबर लग गई। यूनुस बताते हैं 'मेरे भतीजे सलमान पर इन दबंगों ने आरोप लगाया कि सलमान ने उनकी बहन से छेड़छाड़ की है ताकि हाकिम, सलमान को बचाने घर से निकले। हाकिम बड़े भाई के साथ सलमान के मामले में थाने गए। वापस आ रहे थे तो गांव के ढाबे पर कुछ लोगों को मीटिंग करते देख शक हुआ। इन्होंने पुलिस को खबर दी,लेकिन पुलिस टस से मस नहीं हुई। घर आने पर हाकिम जैसे ही महविश की दवा लेने दोबारा घर से निकला तो उसे गोलियों से भून दिया। उसके बाद पुलिस ने अपने चार कर्मचारी यहां तैनात कर दिए।' हाकिम हत्याकांड में महविश ने कुल नौ लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करवाई। पांच गिरफ्तार किए जा चुके हैं जबकि मुख्य षड्यंत्रकारी चार लोग फरार हैं। यूसुफ आत्मदाह वाले मामले में एक भी गिरफ्तारी नहीं हुई। हाल ही में महविश पर हुए हमले को पुलिस बता रही है कि ईख के खेत के कुत्तों ने उसपर हमला किया है। ●

मनीषा भल्ला

पुलिसिया रवैया से आजिज आ चुके महविश के जेठ यूसुफ ने आत्मदाह कर लिया।